DEMAND AND SUPPLY THEORY OF WAGES
OR
MODERN THEORY OF WAGES
(मजदूरी का आधुनिक सिद्धांत)

आधुनिक आर्थिक जगत में मजदूरी के आधुनिक सिद्धांत का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इसे मजदूरी का मांग व पूर्ति सिद्धांत (Demand and Supply theory of Wages) भी कहा जाता है। मजदूरी के आधुनिक सिद्धांत को जानने से पूर्व यह समझना आवश्यक है कि मजदूरी क्या है?

Meaning Of Wages:— श्रम (Labour) उत्पादन का एक महत्वपूर्ण साधन है। शारीरिक या मानसिक किसी भी प्रकार की श्रम-सेवा का भुगतान, मजदूरी होती है। साधारण बोलचाल की भाषा में हम यह कहते हैं दफ्तर का अधिकारी, मंत्री या अध्यापक वेतन प्राप्त करता है, वकील या डॉक्टर फीस लेता है और श्रमिक को मजदूरी मिलती है। लेकिन अर्थशास्त्र में ऐसा कोई भेद नहीं किया जाता है, और यह कहा जाता है कि वेतन, फीस इत्यादि के रूप में सभी मजदूरी ही प्राप्त करते हैं।

अर्थशास्त्र में श्रम से मनुष्य के उन शारीरिक और मानसिक प्रयत्नों का बोध होता है जो धनोत्पादन के उद्देश्य से किये जाते हैं।

"राष्ट्रीय आय का वह भाग जो उत्पादन-क्रिया में सहयोग प्रदान करने के बदले श्रम को दिया जाता है, मजदूरी कहलाता है।"

अब प्रश्न यह उठता है कि मजदूरी की दर का किस प्रकार निर्धारित किया जाए। इसी संबंध में समय-2 पर

Scanned with CamScanner

विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने विभिन्न सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है। इन सिद्धांतों में मजदूरी के आधुनिक सिद्धांत का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक अर्थशास्त्री अपने पूर्व के अर्थशास्त्रियों द्वारा दिये गये सिद्धांत को दोषपूर्ण मानते हैं। आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने मूल्य के सामान्य सिद्धांत को मजदूरी के क्षेत्र में भी लागू किया है।

Theory (सिद्धांत) :—

इस सिद्धांत के अनुसार, "किसी वस्तु का मूल्य उसकी माँग एवं पूर्ति द्वारा निर्धारित होता है। मजदूरी भी श्रम की सेवाओं की कीमत है। अतः मजदूरी की दर का निर्धारण भी मजदूरों की माँग एवं पूर्ति द्वारा होता है।"

चूंकि इस सिद्धांत में पूर्ण प्रतियोगिता में मजदूरी की दर का निर्धारण होता है अतः इस सिद्धांत को हम पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत मजदूरी का निर्धारण भी कह सकते हैं।

Assumptions of the theory (सिद्धांत की मान्यताएँ) :—

(1.) व्यवसाय की स्वतंत्रता → व्यवसाय की पूर्ण स्वतंत्रता है। कोई भी नियोजक किसी को भी नियुक्त कर सकता है और कोई भी वर्कर किसी भी मालिक के पास काम कर सकता है।

(2) अनेक नियोजक एवं वर्कर → श्रम बाजार

में अनेक नियोजक व वर्कर है कोई भी अकेला मजदूरी को प्रभावित नहीं कर सकता है।

(3) पूर्ण गतिशीलता → वर्करों की विभिन्न रोजगारों में पूर्ण गतिशीलता पाई जाती है।

(4) पूर्ण रोजगार → अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार पाया जाता है। रिक्त स्थान उसी समय भर जाते हैं।

(5) श्रम बाजार का पूरा ज्ञान → वर्करों व नियोजकों को श्रम बाजार का पूर्ण ज्ञान है अर्थात वर्करों को यह मालूम है कि रिक्त स्थान कहाँ है, मजदूरी दर क्या है? इसी प्रकार नियोजकों को भी मालूम है कि वर्कर किस मजदूरी पर एवं कहाँ उपलब्ध है।

Explanation of theory! →
ट्रेड यूनियनों के अभाव और पूर्ण प्रतियोगिता मान लेने पर श्रम के लिए माँग एवं पूर्ति मजदूरी की दर को निर्धारित करती है। इसे निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है! —

Demand for Labour (श्रम की माँग) →
श्रम की माँग उत्पादक करते हैं क्योंकि श्रम धन के उत्पादन में सहायक होते हैं। अर्थात श्रम की माँग उसकी उत्पादकता के कारण होती है। अन्य वस्तुओं की तरह श्रम का भी एक माँग-मूल्य होता है। यह मूल्य उत्पादकों द्वारा मजदूरों को

दी जाने वाली मजदूरी की वह दर है जिस पर वे उत्पादन कार्य में मजदूरों को लगाना चाहते हैं। कोई भी उत्पादक श्रम की सीमांत उत्पादकता के अनुसार ही मजदूरी देना चाहता है।

(Factors effected Demand for Labour)

श्रम की मांग को प्रभावित करने वाले तत्व :- श्रम की मांग निम्नलिखित तीन तत्वों द्वारा प्रभावित होती है →

(i) तकनीकी तत्व (Technical factors) :- श्रमिकों की संख्या में वृद्धि के साथ-2 तकनीक भी उनकी सीमांत उत्पादकता को प्रभावित करता है। सीमांत व्यय सीमांत उत्पादन के बराबर हो।

(ii) उत्पाद हेतु मांग (Demand for the product) :- दूसरा तत्व श्रम के द्वारा उत्पादित वस्तु की मांग है। यदि वस्तु की मांग अधिक हो तो श्रम की मांग भी अधिक होगी। इसी प्रकार, वस्तु की मांग कम है तो श्रम की मांग भी कम होगी। श्रम की मांग की लोच भी द्वारा उत्पादित वस्तु की मांग की लोच पर निर्भर करती है।

(iii) उत्पादन के अन्य साधनों का मूल्य (Prices of other factors of Production) :- श्रम की मांग उत्पादन के अन्य साधनों की कीमत से भी प्रभावित होती है। यदि अन्य साधनों की कीमत अधिक होगी तो इसके बदले श्रम के अधिक इकाइयों के प्रयोग की प्रवृत्ति पायी जाएगी फलस्वरूप श्रम की मांग बढ़ेगी तथा अन्य साधनों

की कीमत कम होने से श्रम की माँग भी कम होगी। उद्योग के श्रम का माँगवक्र बाँयी से दाँयी ओर नीचे झुकता चला जाता है। यह इस बात को व्यक्त करता है कि कम मजदूरी दर पर अधिक तथा अधिक मजदूरी दर पर कम श्रमिक उद्योग द्वारा लगाये जाते हैं। माँग वक्र अल्पकाल में बेलोच तथा दीर्घकाल में लोचपूर्ण हो जाता है।

Supply of Labour (श्रम की पूर्ति):— श्रम की पूर्ति का अर्थ है श्रमिकों की वह संख्या जो मजदूरी की प्रत्येक संभव दर पर रोजगार हेतु अपने को प्रस्तुत करेगी। मजदूरी और श्रम की मात्रा के बीच सीधा संबंध होता है। अर्थात अधिक मजदूरी पर अधिक तथा कम मजदूरी पर कम श्रम की मात्रा उपलब्ध होती है।

श्रम की पूर्ति को प्रभावित करने वाले तत्व:—

(i) विवर्तन → व्यवसायिक विवर्तन अर्थात किसी उद्योग में मजदूरी बढ़ने पर श्रम का बहाव उसी ओर होगा।

(ii) कुशलता → श्रम पूर्ति श्रमिकों की कार्य कुशलता से प्रभावित होता है।

पीछे की ओर ढालू श्रम का पूर्ति वक्र: श्रम की पूर्ति के लिए

एक और महत्वपूर्ण साधन काम अवकाश अनुपात (Work-leisure ratio) होता है।

Work leisure ratio:—
कम मजदूरी स्तर पर श्रमिक अधिक घंटे काम करेगा। मजदूरी की दर बढ़ने पर अधिक पैसे मिलते हैं। प्रत्येक वर्कर के जीवन में ऐसा समय आता है जब उसे यह अनुभव होता है कि उसकी जरूरतें आसानी से पूरी हो जाती हैं। यदि मजदूरी की दर और बढ़ती है तो वह कम घंटे काम तथा अधिक घंटे अवकाश पर ध्यान देगा। अर्थात श्रम की पूर्ति वक्र पीछे की ओर ढाल होगा।
जब मजदूरी की दर बढ़ती है तो श्रमिकों की इस प्रवृत्ति में 2 बातें दिखाई देती हैं:—

(i) प्रतिस्थापन प्रभाव (Substitution Effect):—
मजदूरी बढ़ने पर श्रमिक अवकाश के स्थान पर काम का स्थानापन्न करेगा।

(ii) आय प्रभाव (Income Effect):—
जब मजदूरी काफी बढ़ जाती है तो श्रमिक अनुभव करते हैं कि वे पहले से अच्छी स्थिति में हैं तो वह अधिक अवकाश लेना चाहेगा।
इसे रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है →

Diagrammatic Representation:—

Scanned with CamScanner

Explanation:-

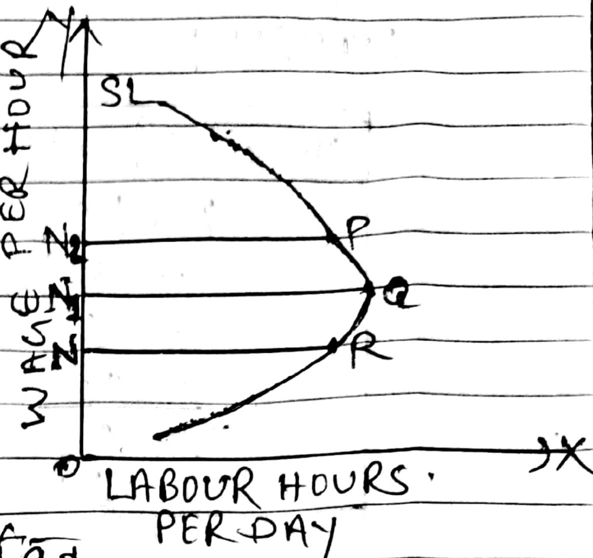

संलग्न चित्र में OSL श्रमिक का श्रम घंटों का पूर्ति वक्र है। जब मजदूरी प्रतिघंटा बढ़कर ON से ON1 हो जाती है तो श्रम की पूर्ति NR से बढ़कर N1Q हो जाती है। Q बिन्दु पर पूर्तिवक्र vertical है पर आगे यह इस बिन्दु से पीछे की ओर मुड़ जाता है। अब यदि मजदूरी ON1 से ON2 हो जाती है तो श्रम घंटों की पूर्ति N1Q से घटकर N2P हो जाती है।

Equilibrium of Demand and Supply / Wage Determination:-

एक उद्योग में मजदूरी की दर उस बिन्दु पर निर्धारित होगी जहां श्रम के लिए मांग उसकी पूर्ति के बराबर होगी। अर्थात मजदूरी इन्ही 2 सीमाओं के बीच तय होती है। मजदूरी की अधिकतम सीमा श्रम की सीमांत उत्पादकता द्वारा निर्धारित होती है तथा न्यूनतम सीमा, श्रमिकों के रहन-सहन के स्तर को बनाये रखने पर जो व्यय होता है उससे तय होती है। इसे संलग्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है।

EXAMPLE :-

मजदूरी की दर (रुपये में)	श्रम की मांग	श्रम की पूर्ति
Rs 10	50	600
" 8	100	300
" 6	150	250
" 4	200	200
" 2	300	100
" 1	600	50

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि जब मजदूरी की दर 4 रुपये प्रतिदिन होती है तो मांग तथा पूर्ति दोनों ही 200 के बराबर होती है। अतः यही मजदूरी की दर है। मजदूरी की दर कम होने पर श्रम की मांग ज्यादा पर पूर्ति कम होगी तथा मजदूरी अधिक होने पर श्रम की मांग कम तथा पूर्ति अधिक होगी। जिस दर पर मांग व पूर्ति आपस में बराबर हो जाती है वही "मजदूरी की दर" भी निश्चित होती है।

Graphical Representation :-

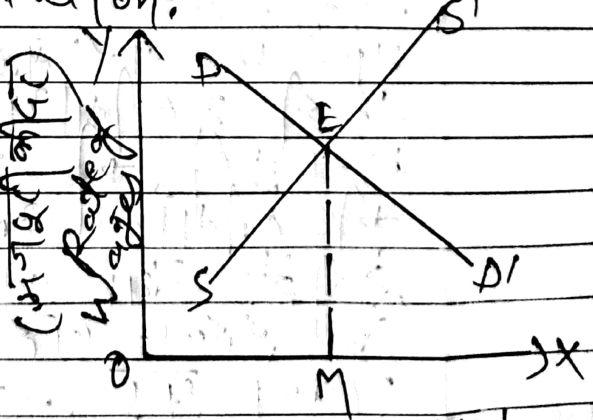

Explanation :- संलग्न चित्र में OX रेखा पर श्रम की मांग एवं OY पर मजदूरी की दर है। DD, वक्र श्रम की मांग वक्र है तथा SS, पूर्ति वक्र। दोनों एक-दूसरे को E बिन्दु पर काटते हैं। अतः EM मजदूरी की दर है। मजदूरी की इसी दर पर श्रम की मांग व पूर्ति दोनों एक दूसरे के बराबर होंगे। इस प्रकार जब एक बार सम्पूर्ण उद्योग के लिए wage rate निश्चित हो जाती है तो यह सभी के लिए मान्य होता है।